अंगूर में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग तथा उनका प्राकृतिक प्रबंधन

कृषि कुंभ (नवंबर 2023),
खण्ड 03 अंक 06, पृष्ठ संख्या 25–28

अंगूर में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग तथा उनका प्राकृतिक प्रबंधन

रवि कुमार रजक[1] एवं ओम नारायण[2],
[1]शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
[2]फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज,
अयोध्या, उतर प्रदेश–224229, भारत।

Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय–

अंगूर की बेल विटेसी कुल से संबंधित है, जबकि अंगूर की सबसे ज्यादा प्रयोग की जाने वाली किस्में विटिस विनिफेरा प्रजातियों से संबंधित होती हैं। और बांकि सब यूवाइटिस उप–प्रजातियों का प्रयोग व्यापक फिलॉक्सेरा समस्या वाले क्षेत्रों में रूटस्टॉक के रूप में किया जाता है। और अंगूर सदाबहार पौधे की एक झाड़ी है, जिसे इसकी घुमावदार बेलों और अनुगामी विकास से जाना जाता है। यह एक चढ़ने वाला पौधा है और सामान्य तौर पर पत्थरों या पेड़ों के तनों के ऊपर चढ़ता है। और इसकी बेलों के तंतु तने पर बढ़ते हैं और इसके फूल नीचे की ओर होते हैं। इसकी पत्तियां बड़ी, विपरीत, दिल के आकार की होती हैं और ऊपर पुष्पक्रम उगते हैं। और इन्हें 3–5 लॉब और अलग–अलग तनों के साथ ऊपर चढ़ाया जा सकता है। पत्तियों की आकृति, आकार और रंग किस्म पर निर्भर करता है। और अंगूर में बहुत से कीट नुकसान पहुंचाते है। जो निम्न है।

अंगूर के प्रमुख कीट और उनका नियंत्रण–

पिस्सू बीटल– इसके वयस्क बीट्लस प्रत्येक छंटाई के बाद अंकुरण कलियों को स्क्रैप कर देते है। और इसकी क्षतिग्रस्त कलियां अंकुरित होने में असफल हो जाती है। बीट्लस कलियों और पत्तियों पर भोजन भी लेता है, और टेन्ड्रिल बहुत अधिक नुकसान पैदा करता है। और इसकी टेंडर कलियां सूखकर नीचे गिर सकती है। और अगली छंटाई के बाद जब कोपल कलियां क्षतिग्रस्त होती है तो नुकसान बहुत ज्यादा होता है।

थ्रिप्स कीट– यह थ्रिप्स कीट अंडाकार, काले रंग के छोटे कीड़े हैं जो कि पत्तियों के नीचे की ओर अंडा जमा करती है। और इसकी दोनों निम्फ और वयस्क पत्ती की निचली सतह से सेल का रस चूसते है। जिससे पत्ती में एक धब्बा उत्पन्न होता है और जिसे दूर से देखकर पता लगाया जा सकता है। और यह भारी घटना होने की स्थिति में, पत्तियां सुख सकती है और बेल को छोड़ सकती हैं।

पत्ती लपेटक कीट– इस कीट के लार्वे मुलायम पत्तियों को रेशमी धागों से लम्बवत् लपेटकर जाला बनाते हैं और अंदर ही अंदर पत्तियों को खाते रहते हैं। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियाँ समय से पूर्व ही सूखने लगती हैं जिससे बाग की उपज क्षमता कम हो जाती है।

स्केल कीट– यह कीट पंजाब के अंगूर के बागों में सबसे पाया जाने वाला कीट है। यह

कीट अंगूर बेल, ट्रंक और इसकी भुजाओं को लूज करता हैं और इसकी मादा उसी लूज बारक या छिद्र में अपने अंडे रख देती है। ये कीड़े पत्तियों, डंठल, मुख्य बेलों और ग्रेपवाइन के टेंडर शूट से रस को चूसते हैं। और इसकी सुनहरी पीली दिखाई देने वाली कमजोर कली ग्रोथ की पत्तियां कीटों के आक्रमण की एडवांस स्टेज को दर्शाता है। और कुछ समय में इसकी बेल सूख जाती है।

कीट नियंत्रण के उपाय–

- ❖ किसान भाई सबसे पहले बगीचों की साफ–सफाई का ध्यान रखें।
- ❖ अगर प्रभावित पत्तियाँ कम हों और पेड़ छोटे हों तो हाथ से तोड़कर ऐसी पत्तियों को नष्ट कर दें।
- ❖ कीट से ग्रसित शाखाओं को काटकर जला दें।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए नीमास्त्र का प्रयोग करें। और इस नीमास्त्र को बनाने के लिए 5 किलोग्राम नीम की पत्तियां लें या फिर 5 किलोग्राम नीम के फल लें, और इनको कुचल लें, और फिर इसमें 5 लीटर देशी गाय का गौमूत्र मिलायें, एवं इसी में 1 किलोग्राम देशी गाय का गोबर मिलायें और फिर इसी में 100 लीटर पानी मिलाकर एक प्लास्टिक के ड्रम में भर दें, और इसे 48 से 72 घण्टे के लिये बोरा से ढककर रख दें और सुबह या शाम के समय लकड़ी की सहायता से घुमाते रहें और 72 घण्टे पूरे होने के बाद कपड़े की सहायता से छान लें। और फिर 500–700 ग्राम प्रति 15 लीटर के हिसाब से किसी भी फसल पर उपयोग करें। जिस फसल में भी रस चूषक कीटों का प्रकोप हो गया है या फिर छोटी इल्लियां हैं इन सभी के लिए यह बहुत ही असर दार होगा।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबाल कर ठण्डा कर लें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ तीन घोल जैव–कीटनाशी का प्रयोग करें और यह इस प्रकार बनता है। जैसेः सामग्री और उसकी विधि–3 किलोग्राम कुचली एवं पीसी हुए नीम की पत्तियां और 1 किलोग्राम निंबोली पाउडर को 10 लीटर गौ–मूत्र एक ताम्र घट (15 लीटर क्षमता का) में मिलाकर लें और जब तक इसकी मात्रा आधी न रह जावे। और इसके बाद इस घोल को 10 दिनों तक सड़ने दें। और 500 ग्राम कुचली एवं पिसी हुई हरी मिर्च को 1 लीटर पानी में रातभर भिगो कर रखें। और 250 ग्राम पिसा हुआ लहसुन को 1 लीटर पानी में मिलाकर रातभर के लिए रख दें। एवं इसका उपयोग इस तरीके से है। कि कीट नियंत्रण के लिए तीनों मिश्रण को 200 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ में छिड़काव करें।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए अग्नि अस्त्र का प्रयोग करें। जो इस प्रकार से बनाया जाता है। इसमे 5 किलोग्राम नीम की पत्ते लें, और 20 लीटर देशी गाय का गौमूत्र लें, और फिर तम्बाकू के पत्ते या फिर डंठल या पिसा हुआ तम्बाकू पाउडर 500 ग्राम लें, और 500 ग्राम तीखी मिर्च की चटनी लें, और फिर 500 ग्राम लहसुन की चटनी लें, इन सभी चीजो को धीमी आंच पर एक उबाल आने तक उबालें। और फिर इस मिश्रण को 48 घण्टे तक छाया में रखें और इसके बाद कपड़े से छानकर 6 से 8 लीटर घोल 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़

की फसल पर छिढ़काव करें। लेकिन इस बने हुए अग्नि अस्त्र को 3 माह के अन्दर ही प्रयोग कर लें।

अंगूर के प्रमुख रोग और उनका नियंत्रण–

पाउडरी मिल्ड्यू रोग– यह रोग अन्सीनुला नेक्टर द्वारा फैलता है। और यह अंगूरों की पत्तियों, तनों तथा फलों को प्रभावित करता है। और छोटी पत्तियों की दोनों सतहों पर सफेद रंग के धब्बे दिखाई देते है। और यह धब्बे पत्ति पर आकार में वृद्धि करते हैं तथा पत्ती की सतह पर फैल जाते हैं और पति की सतह पर विशेष प्रकार के सफेद पाउडर जैसा आवरण होता है और इस रोग के अधिक फैलने पर पत्तियों का रंग धूसर सफेद दिखाई देने लगता है जिससे पत्तियां बोनी, ऐठीं हुई तथा बहुत बेकार दिखाई देने लगती हैं और संक्रमित तने धूसर होकर गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं

रोगग्रस्त अंगूर– प्रूनिंग के समय संक्रमण के कारण पुष्प के भागों पर धूसर सफेद चूर्णिल वृद्धि दिखाई देती है। और इससे पुष्प झड़ जाते हैं। और इस रोग की उग्रता के फलस्वरुप संपूर्ण पुष्पक्रम रंगहीन तथा बांझ दिखाई देने लगता है और रोग से प्रभावित अंगूर कुरूप तथा अनियमित आकार के हो जाते हैं और छिलके पर धूसर से गहरे भूरे धब्बे बन जाते हैं और फलों के छिलके फट जाते हैं तथा अंदर का गूदा बाहर से दिखाई देने लगता है और रोग ग्रस्त शिशु फलों की वृद्धि रुक जाती है और रोगाणु पोषक ऊतकों पर आक्रमण कर उसकी एपिर्डमल कोशिकाओं में चूसकांगो को प्रविष्ट करवाता है। और यह कवक पोषक की सतह पर फैल जाता है सफेद पाउडरी वृद्धि का कवक जाल में कोनिडियोफोर्स तथा कोनिडिया उत्पन्न करता है।

ग्रेपवाइन फैनलीफ रोग– इस रोग के विषाणु के अनेक स्ट्रेंन्स होते हैं और यह विभिन्न प्रकार के लक्षणों को उत्पन्न करते हैं। और इनसे बहुत अधिक हानि होती है। विषाणु स्ट्रेन्स के अनुसार संक्रमित पत्तियां हरे या पीले मोजेक घेरे तथा फ्लेक्स प्रदर्शित करती है। और अन्य किस्मों में पत्तियां छोटी तथा अनियमित होती हैं। और कई किस्मों में सिराएं असामान्य रूप से फैली जाती हैं, जिससे पत्ति की आकृति फैनलाइक हो जाती है। और पत्तियों में क्रोम पीला कबुर्रण दिखाई देने लगता है। और कर्बुरण क्षेत्र पीला हो जाता है तथा ऊतकक्षयी होकर अंत में पत्तियां गिर जाती हैं। और तनों की संन्धियों की लंम्बाई असमान हो जाती है तथा दोहरी पर्ब संन्धिया बन जाती हैं। पत्तियां चपटी तथा तने, छाल तथा काष्ट प्रिंटिंग दिखाई देने लगते हैं। फल बहुत कम बनते हैं और गुच्छों में से अधिकांश पुष्प झड़ जाते हैं। और छोटे बीज रहित भारी फल अन्य फलों के साथ बनते हैं। और अंगूर की लताएं बहुत कम विकसित होकर मर जाती हैं। ग्रेपवाइन फैनलीफ वायरस एक नींपो वायरस होता है। और इसका व्यास 30 मिलीमीटर होता है। यह विषाणु कलिकायन ग्राफ्टिंग कटिंग तथा निमेटोड द्वारा संचरित होता है।

निचला फफूंदी रोग– इसका रोगवाहक *प्लास्मोपारा विटिकोला* है।

लक्षण– अंगूर के सभी हरे हिस्से अति संवेदनशील होते हैं। और प्लास्मोपारा विटिकोला की वजह से अंगूर में डाउनी फफूंदी के पहले लक्षण आमतौर पर संक्रमण के 5 से 7 दिनों के बाद पत्तियों पर दिखाई देते हैं। और फोलियर लक्षण एक ऑयली उपस्थिति के साथ पीले गोलाकार धब्बें के रूप में दिखाई देते हैं। और प्रौढ़ पत्तियों पर तेल के टुकड़े एक भूरे पीले प्रभामंडल से घिरे

दिखते हैं। यह प्रभामंडल तेलपॉट के रूप में परिपक्व होता हैं। धब्बे सफेद अंगूर की किस्मों में पीले और कुछ लाल अंगूर की किस्मों में लाल होते हैं जैसे रुबी रेड।

पत्तियों पर रोग के लक्षण– मौसम की स्थिति के तहत बड़ी संख्या में ऑयल स्पॉट विकसित हो सकते हैं। और पत्ती की अधिकांश सतह को कवर करने के लिए यह मोटे हो सकते हैं। उपयुक्त रूप से गर्म, नम रातों के बाद पत्तियों और अन्य संक्रमित पौधों के हिस्सो के नीचे एक सफेद फफूंद अपनी वृद्धि स्पोरजिंया दिखाई देती है इस निचली वृद्धि की उपस्थिति से रोग का नाम डाउनी मिल्ड्यू हो जाता है।

पियर्स रोग– इस रोग में अंगूर की हरी पत्तियों पर सूखने जैसे झुलसने के लक्षण दिखाई देते हैं किंतु पत्तियों के किनारे हरे बने रहते हैं। और झूलसे क्षेत्र पत्ती के मध्य में अधिक विकसित होते हैं और बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं अंत में पत्तियां झड़ जाती हैं किंतु उनके वृन्द तने पर लगे रहते हैं पत्तियों के लक्षणों सहित अंगूरों के गुच्छो की वृद्धि रुक जाती है तथा यह ग्लानी प्रदर्शित करके सूख जाते हैं। रोगग्रस्त तने अनियमित रूप से परिपक्व होते हैं तथा कोरटेक्स में भूरी छाल बनने लगती है।

रोगग्रस्त पत्ते– आने वाले मौसम में रोगग्रस्त पौधों में बसंत वृद्धि देर से होती है। पौधे बौने तथा प्रथम कुछ पत्तियों में सिरा बेंण्डिंग पाया जाता है। और बाद के मौसम में पत्तियां तथा फल वाले लक्षण प्रदर्शित होते हैं। और बाद के मौसम में पत्तियों तथा फल वाले लक्षण प्रदर्शित होते है। मूल तंत्र में डाइबैक हो जाने के फलस्वरुप शीर्ष की वृद्धि मंद हो जाती है। और मौसम के प्रारंभ में लताओं के काष्ठ के सभी आंतरिक भागों में पीली से भूरी धारियां दिखाई देती हैं, जो आरीय होती हैं। काष्ठ

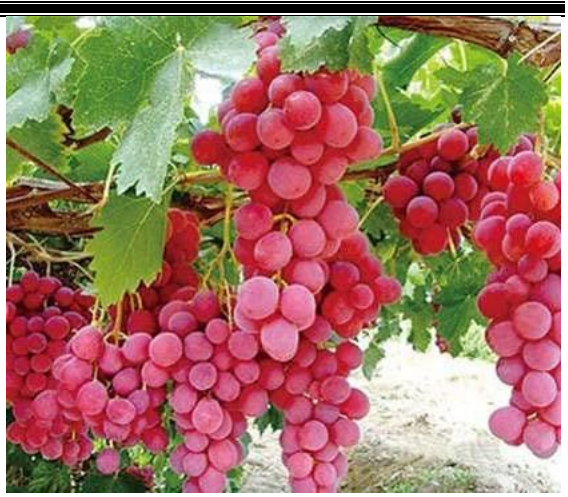

के जाइलम में गोंद बनने लगता है तथा अन्य जाइलम में टाइलोसिस होने लगती है इन दोनों क्रियाओं से जाइलम बेसिल्स अवरूद्ध हो जाते हैं और इससे रोगग्रस्त पौधों पर बाह्य लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

रोग नियंत्रण के उपाय–

- ❖ प्रतिरोधी किस्मों को ही बोना चाहिए।
- ❖ गिरी हुई पत्तियों और टहनियों को इकट्ठा करके जला देना चाहिए।
- ❖ उचित माध्यम द्वारा हवा के संचालन के लिए बेल को जमीन से ऊपर रखा जाना चाहिए।
- ❖ व्यावसायिक स्तर पर अंगूर में इस रोग का नियंत्रण करना बहुत कठिन है।
- ❖ फलों में लगने वाले सभी कीटों के नियंत्रण के लिए नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, सोंठास्त्र का प्रयोग करें।
- ❖ उचित माध्यम द्वारा हवा के संचालन के लिए बेल को जमीन से ऊपर रखा जाना चाहिए।
- ❖ एम्बर क्वीन, कार्डिनल, चंपा, चैंपियन, डॉग्रिज और रेड सफलताना जैसी प्रतिरोधी किस्में उगाए।
- ❖ समय–समय पर अन्य संक्रमण रोकने के लिए बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना चाहिए।